I

ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 1, January-March 2026 ISSN (O)- 3107-9679
Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

भारतीय अर्थव्यवस्था में सतत् विकास और आर्थिक वृद्धिः एक अध्ययन

डॉ. सुलेखा कुमारी

सहायक प्राध्यापक, अर्थषास्त्र विभाग, डॉ0 एल. के. भी. डी. कॉलेज, ताजपुर, समस्तीपुर, एल. एन. एम. यू., दरभंगा।

Article Info: *(Recieved- 15/01/2026, Accept- 10/02/2026, Published- 10/02/2026)*
DOI- 10.70650/rpimj.2026v2i1000016

सारांशः सतत विकास और आर्थिक वृद्धि आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं, जो किसी भी देश की प्रगति की दिशा और गुणवत्ता दोनों को निर्धारित करती हैं। आर्थिक वृद्धि वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से उत्पादन, आय और रोजगार में वृद्धि होती है, जबकि सतत विकास इस वृद्धि को पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से दीर्घकालिक और संतुलित बनाता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और तकनीकी विस्तार ने जहाँ आर्थिक प्रगति को गति दी है, वहीं पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे में सतत विकास की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। संयुक्त राष्ट्र की 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि ऐसा विकास आवश्यक है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करें। भारत में तीव्र आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ पर्यावरणीय स्थिरता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ भारत अभियान, राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन योजना और सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत विश्व के अग्रणी देशों में शामिल है और हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में निरंतर अग्रसर है। अतः कहा जा सकता है कि आर्थिक वृद्धि और सतत विकास एक–दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। दीर्घकालिक और समावेशी विकास तभी संभव है जब आर्थिक नीतियाँ पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के साथ संतुलित रहें। सतत विकास ही वह मार्ग है जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए स्थिर, सुरक्षित और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकता है।

कुँजीः आर्थिक, विकास, पर्यावरण, औद्योगिकीकरण, नीतियाँ।

प्रस्तावनाः 21वीं सदी में मानव सभ्यता अभूतपूर्व आर्थिक परिवर्तन से गुजर रही है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण ने आर्थिक वृद्धि को तीव्र बनाया है। किन्तु यह वृद्धि कई बार पर्यावरणीय असंतुलन, संसाधनों के क्षरण और सामाजिक विषमता को जन्म देती है। ऐसे में प्रश्न उठता है– क्या विकास केवल आर्थिक संकेतकों से मापा जा सकता है, या उसे सततता के मानकों से भी जोड़ना आवश्यक है? संयुक्त राष्ट्र की 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने "सतत विकास" को परिभाषित करते हुए कहा– "वह विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की क्षमता को क्षति नहीं पहुँचाता।" यह परिभाषा यह स्पष्ट करती है कि विकास का उद्देश्य केवल वृद्धि नहीं, यह संतुलित और दीर्घकालीन प्रगति होना चाहिए।

वर्तमान वैश्विक युग में विकास की परिभाषा केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रही है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग भी शामिल हो गया है। सतत विकास

का मूल उद्देश्य ऐसा विकास सुनिश्चित करना है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों से समझौता न करे। दूसरी ओर, आर्थिक वृद्धि किसी देश की उत्पादन क्षमता, आय और रोजगार के विस्तार को दर्शाती है। यह देखा गया है कि तीव्र आर्थिक वृद्धि के प्रयास में पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं की उपेक्षा की जाती है, जिससे असमानता, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए आधुनिक युग में विकास का स्वरूप केवल मात्रात्मक वृद्धि नहीं, गुणात्मक सुधार की दिशा में भी होना चाहिए।

सतत विकास लक्ष्य या एजेंडा 2030 में मुख्यतः 5P (People, Planet, Peace, Prosperity and Partnership) पर जोर दिया गया है। भारत सरकार ने भी सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत एवं सतत समावेशी बनाने का सार्थक प्रयास किया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की छठी सर्वोच्च अर्थव्यवस्था है (जी०डी०पी० के संदर्भ में)। आज भारत में रिकार्ड खाद्यान उत्पादन (2016–17 में 275.11 मिलियन मिट्रिक टन वार्षिक) हो रहा है। 2017–18 में भारतीय आर्थिक वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत था। वित्तीय वर्ष 2018–19 में अन्तराष्ट्रीय मृदा कोष (आई०एम०एफ०) ने भारत के विकास दर (7.3 प्रतिशत) अनुमानित रहने का घोषणा की है, जो विश्व में सर्वाधिक एवं गतिशील है। अमेरिकी क्रेडिट एजेन्सी मूडीज ने 13 वर्षो बाद 2017 में भारतीय अर्थव्यवस्था की रेटिंग को Baa3 से सुधार करके Baa2 श्रेणी में परिवर्तित कर दिया है।

भारत सरकार ने टिकाऊ कृषि ैक्ळ 2 का हिस्सा) के विकास हेतु जैविक खेती (Organic Farming) पर विशेष जोर दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप सिक्किम राज्य भारत का प्रथम पूर्ण जैविक राज्य का दर्जा कर चुका है। मिजोरम और हिमाचल प्रदेश इस मार्ग में अग्रसर है। आज भारत में लगभग 22.5 लाख हे० जमीन पर जैविक खेती हो रही है। विश्व में जैविक खेती के मामले में भारत का

अभी 15वां स्थान है। पिछले वित्तीय वर्ष 2017–18 में 1.35 मिलियन मिट्रिक टन जैविक उत्पादों का उत्पादन किया गया है। 2015–16 में 263687 मिट्रिक टन जैव उत्पाद के निर्यात से देश को कुल 298 मिलियन अमेरिकी डॉलर प्राप्त हुए है। भारत सरकार ने हरित क्रान्ति–कृषोन्नति योजना (2017–20 तक संचालित, इसमें कुल 11 योजनाएँ/मिशन शमिल), ऑपरेशन ग्रीन (आलू, प्याज एवं टमाटर के मूल्य स्थिर करना) सम्पदा योजना (खाद्य प्रसंस्करण हेतु) राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड, 24 कृषि फसलों की न्यूनत्तम समर्थन मूल्य (MSP) में मूल्य की लागत का 1.5 गुना करना आदि योजनाओं के सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

भारत सरकार ने अर्थव्यवस्था को मजबूत और भ्रष्टाचार मुक्त बनाने हेतु वस्तु एवं सेवा कर (जी०एस०टी०), विमुद्रीकरण (Demonitization), बैंकक्रप्टसी एण्ड इनसॉलवेन्सी कोड 2018, भगौड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम 2018, बेनामी संपत्ति लेन–देन निषेध संशोधन अधिनियम 2018 (PBPT Act 1998 में संशोधन), सशक्त परियोजना (बैंको की बढ़ती एन०पी०ए० को दूर करने के लिए), बैंकिग आंतरिक लोकपाल योजना 2018 आदि योजनाओं का दृढ़ता से क्रियान्यवयन सुनिश्चित किया है।

जल संरक्षण (SDG 6 का हिस्सा) के क्षेत्र में भारत सरकार ने जल क्रांति अभियान (2015 से शुरू) के तहत 1001 गाँवों का चयन किया है (लक्ष्य 1348 जलग्राम का चयन करना) जिसका लक्ष्य जल संभरण एवं संरक्षण में वृद्धि करना है। इसके तहत प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, एकीकृत वाटरशेड मैनेजमेंट कार्यक्रम, राष्ट्रीय जल मिशन कार्यक्रम, त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, बाँध पुनरूद्वार एवं सुधार परियोजना आदि शामिल है। प्रत्येक जलग्राम में सुजलम कार्ड से पेयजल स्त्रोतों की गुणवत्ता के बारे में वार्षिक सूचना सरकार को दी जायेगी। ड्रिप और स्प्रिंकल सिंचाई विधियों को अपनाने पर भारत सरकार जोर दे रही है जिससे क्रमशः 80 प्रतिशत एवं 50–70 प्रतिशत (कुल सिन्चित जल) जल की बचत होगी। तमाम जल संरक्षण उपायों के बावजूद भी देश की 7.6 करोड़ आबादी (कुल भारतीय जनसंख्या का 6 प्रतिशत) स्वच्छ जल से वंचित है जो विश्व में सर्वाधिक है (WHO के अनुसार) भारत में बारिश का केवल 12 प्रतिशत जल ही संरक्षित हो पाता है। इसके निदान के लिए जल संभरण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है, फिर भी आज जल प्रदूषण भारत के लिए एक गम्भीर समस्या बनी हुई है।

सामाजिक कल्याण और पारिस्थितिक व्यवहार्यता पर आर्थिक विकास के पक्ष में व्यापार नापसंद से सतत् विकास प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न हुई, जो संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्यों द्वारा अपनाएं गये सतत् विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Gols) को भी प्रभावित कर सकता है। इसके विपरीत समावेशी विकास की अवधारणा विकास के सामाजिक पारिस्थितिक और राजनीतिक आयामों पर जोर देती है। इस सन्दर्भ में यह पेपर इस प्रश्न को सम्बोधित करता है। समावेशी विकास का क्या अर्थ है? और (SDGS) के निर्धारण में इसे किस हद तक ध

यान में रखा जाता है? यह समावेशी विकास को पांच सिद्धान्तो के साथ तीन प्रमुख आयामों (सामाजिक पारिस्थितिक और सम्बन्धपरक समावेशन) के रूप में प्रस्तुत करता है। यह 17ैक्ळै और उनके लक्ष्यों पर लागू होता है। उनका उद्देश्य 169 है। जबकिैक्ळ पर पाठ सामाजिक समावेश पर काफी अच्छा प्रदर्शन करता है, यह पारिस्थितिक और सम्बन्धपरक समावेशन के सम्बन्ध में कम अच्छा प्रदर्शन करता है । इसका तात्पर्य यह है कि एक जोखिम है कि कार्यान्वयन प्रक्रियाएं पारिस्थितिक और सम्बन्धपरक समावेशन के बजाय सामाजिक समावेशिता पर भी अधिक ध्यान केन्द्रित करती है। इसके आलावा एन्थ्रोपोसीन में सामाजिक समावेश को वास्तव में प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि बाद के दो को वास्तविक कार्यन्वयन प्रक्रिया में समान महत्व दिया। सतत् विकास अवसर मजबूत व्यापार बन्द की ओर जाता है। ज्यादातर आर्थिक विकास के पक्ष में समावेशी विकास मुख्य रूप से विकास के सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं और वर्तमान पीढ़ियों पर ध्यान केन्द्रित करके प्रतिक्रिया करता है। जबकि साहित्य कुछ विस्तार से समावेशी विकास को शामिल करता है। कुछ लेखक विस्तार से समावेशी विकास पर विस्तार से बताते है और अवधारणा को कैसे चालू किया जाता है। यह लेख विकास बहस में समावेशी विकास को प्रथम स्थान देता है । इसके बाद यह प्रति समावेशी विकास पर चर्चा करता है। एन्थ्रोपोसीन में और एक सम्बन्धपरक दृष्टिकोण से अन्त में यह विस्तृत करता है कि कैसे समावेशी विकास को लागू किया जा सकता है। प्रासंगिक महामारी समुदायों अभ्यास के सदस्यों और सामाजिक आन्दोलनों को विकसित करना। सशक्तिकरण को सक्षम करने के लिए शासन को इटरैक्टिव शासन में बदलना। उपयुक्त शासन उपकरणों को अपनाना। यह निष्कर्ष निकलता है कि समावेशी विकास केवल वास्तविक इटरैक्टिव शासन के माध्यम से लाया जायेगा जो उपकरण प्रदान करता है और अनुकूली सीखने और हाशिएं के लोगों को सशक्तिकरण के लिए स्थितियां बनाता है।

शोध के उद्देश्य–

1. सतत विकास और आर्थिक वृद्धि की परिभाषा व उनके बीच संबंध का अध्ययन करना।
2. आर्थिक वृद्धि के पर्यावरणीय एवं सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. सतत विकास की दिशा में अंतरराष्ट्रीय प्रयासों को समझना।
4. भारत की आर्थिक नीतियों में सतत विकास की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. सतत आर्थिक वृद्धि के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि– यह अध्ययन भारत में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि के पारस्परिक संबंध को समझने हेतु किया गया है। शोध प्रविधि का चयन इस प्रकार किया गया है कि विषय के सैद्धांतिक, तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक सभी पक्षों का सम्यक् अध्ययन हो सके। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें सतत विकास के विभिन्न आयामों (आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय) तथा आर्थिक वृद्धि के संकेतकों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

- शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है।
- गुणात्मक दृष्टिकोण से नीतियों, योजनाओं एवं अवधारणाओं का अध्ययन।
- मात्रात्मक दृष्टिकोण से सांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण।

अध्ययन का क्षेत्र भारत है। इसमें राष्ट्रीय स्तर पर लागू सतत विकास नीतियों, योजनाओं तथा आर्थिक वृद्धि से संबंधित प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

आर्थिक वृद्धि में सतत विकास का योगदान– सतत विकास का मूल उद्देश्य वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की क्षमता को सुरक्षित रखना है । भारत जैसे विकासशील देश में सतत विकास केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है, यह आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समावेशन और संसाधन दक्षता का समन्वित मॉडल प्रस्तुत करता है।

1. रोजगार सृजन– हरित उद्योगों से नए रोजगार के अवसर बनते हैं।
2. ऊर्जा सुरक्षा नवीकरणीय ऊर्जा से तेल पर निर्भरता घटती है।
3. पर्यावरण संरक्षण– प्रदूषण घटाने से स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ती है।
4. विदेशी निवेश– हरित परियोजनाओं में निवेशक रुचि दिखाते हैं।

5. दीर्घकालिक वृद्धि– संसाधनों का संतुलित उपयोग आर्थिक प्रणाली को स्थिर बनाता है।

सतत विकास आर्थिक वृद्धि का विरोधी नहीं, बल्कि उसका आधार है। भारत में दीर्घकालीन, स्थिर और समावेशी आर्थिक प्रगति तभी संभव है जब विकास की प्रक्रिया पर्यावरणीय संरक्षण, सामाजिक न्याय और आर्थिक दक्षता के सिद्धांतों पर आधारित हो।

भारत की उपलब्धियाँ– भारत ने पिछले एक–डेढ़ दशक में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि को साथ लेकर चलने की दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं–

1. नवीकरणीय ऊर्जा में उल्लेखनीय प्रगति – सौर और पवन ऊर्जा क्षमता में तीव्र विस्तार, स्वच्छ ऊर्जा से ऊर्जा सुरक्षा और कार्बन उत्सर्जन में कमी एवं हरित निवेश और रोजगार सृजन हुआ है। यह प्रगति राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना के लक्ष्यों के अनुरूप है।
2. ऊर्जा दक्षता में सुधार स्म्क कार्यक्रमों से बिजली खपत और लागत में कमी आई है। उद्योगों में ऊर्जा उत्पादकता बढ़ी है एवं आयातित ईंधन पर निर्भरता कम हुई है।
3. जल एवं स्वच्छता में सुधार – ग्रामीण क्षेत्रों में नल–जल कनेक्शन का तेज विस्तार हुआ है। खुले में शौच में कमी एवं स्वास्थ्य व्यय में गिरावट और श्रम उत्पादकता में सुधार हुआ है।
4. हरित आवरण और पर्यावरण संरक्षण– वनीकरण एवं वृक्षारोपण से हरित आवरण में वृद्धि हुई है। सामुदायिक वन प्रबंधन से ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ हुआ है। जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा मिला है।
5. समावेशी सामाजिक विकास शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण संकेतकों में सुधार हुआ है। डिजिटल सेवाओं से सामाजिक समावेशन गरीबी में कमी आई है, और मानव पूंजी का विकास हुआ है। ये उपलब्धियाँ सतत विकास लक्ष्य की दिशा में भारत की प्रगति को दर्शाती हैं।
6. डिजिटल और हरित अवसंरचना डिजिटल भुगतान और ई–गवर्नेंस से पारदर्शिता, स्मार्ट शहरी सेवाएँ और सतत परिवहन एवं औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुआ है।
7. वैश्विक नेतृत्व और प्रतिबद्धताएँ– अंतरराष्ट्रीय जलवायु मंचों पर सक्रिय भूमिका एवं स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु अनुकूलन में वैश्विक साझेदारी बढ़ी है।

भारत की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि सतत विकास और आर्थिक वृद्धि परस्पर पूरक हैं। नीतिगत सुधार, तकनीकी नवाचार और सामाजिक समावेशन के माध्यम से भारत ने एक ऐसा विकास मॉडल प्रस्तुत किया है, जो दीर्घकालीन, समावेशी और पर्यावरण अनुकूल है।

चुनौतियाँ– भारत ने सतत विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी आर्थिक वृद्धि के साथ संतुलित, समावेशी और पर्यावरण अनुकूल विकास प्राप्त करने में कई प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं–

1. जनसंख्या वृद्धि 140 करोड़ से अधिक जनसंख्या संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डालती है।
2. प्रदूषण– दिल्ली, मुंबई, और पटना जैसे शहर विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं।
3. जल संकट– भूजल स्तर में निरंतर गिरावट और वर्षा की असमानता जल प्रबंधन को कठिन बनाती है।
4. आर्थिक असमानता आय और अवसरों में असमानता सतत सामाजिक विकास में बाधक है।
5. तकनीकी असमानता– हरित तकनीकें ग्रामीण और गरीब तबकों तक सीमित रूप से पहुँची हैं।

भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तेज आर्थिक वृद्धि को बनाए रखते हुए पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और संसाधन दक्षता सुनिश्चित की जाए। इसके लिए समन्वित नीतियाँ, तकनीकी नवाचार, स्थानीय भागीदारी और प्रभावी क्रियान्वयन अनिवार्य हैं।

निष्कर्ष– आर्थिक वृद्धि और सतत विकास दो अलग धाराएँ नहीं हैं, ये एक–दूसरे के पूरक हैं। सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक प्रगति केवल आज के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लाभकारी हो। भारत ने हरित ऊर्जा, स्वच्छ पर्यावरण, और सामाजिक समानता की दिशा में सराहनीय कदम उठाए हैं। फिर भी, जनसंख्या दबाव, प्रदूषण, और जल संकट जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसलिए आवश्यक है कि विकास की परिभाषा ळक्च् वृद्धि तक सीमित न रहे, बल्कि उसमें मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण भी सम्मिलित हो। "विकास तभी वास्तविक है, जब वह सभी के लिए हो और सदा के लिए हो।"

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भारत सरकार राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (छ।च्ब्ब्) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey of India), वित्त मंत्रालय।
3. पंचवर्षीय योजनाएँ योजना आयोग/नीति आयोग, नई दिल्ली।
4. नीति आयोग भारत में सतत विकास लक्ष्य प्रगति रिपोर्ट।
5. संयुक्त राष्ट्र Transforming Our World : The 2030 Agenda for Sustainable Development.
6. दत्त, रूद्र एवं सुंदरम, के.पी. भारतीय अर्थव्यवस्था, सुल्तान चंद एंड सन्स, नई दिल्ली।
7. मिश्रा, एस. के. एवं पुरी, वी. के. अर्थशास्त्र के सिद्धांत, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
8. अग्रवाल, अनिल. पर्यावरण और विकास, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट, नई दिल्ली।
9. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, Human Development Report.
10. भारत सरकार, नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) वार्षिक रिपोर्ट
11. भारत सरकार, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय, राष्ट्रीय जल नीति एवं रिपोर्ट।

Cite this Article

"डॉ. सुलेखा कुमारी", "भारतीय अर्थव्यवस्था में सतत् विकास और आर्थिक वृद्धिः एक अध्ययन", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:1, January-March 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author.